लोक साहित्य और वैश्वीकरण

संपादन

डॉ. सरोज गुप्ता
डॉ. संगीता सुहाने

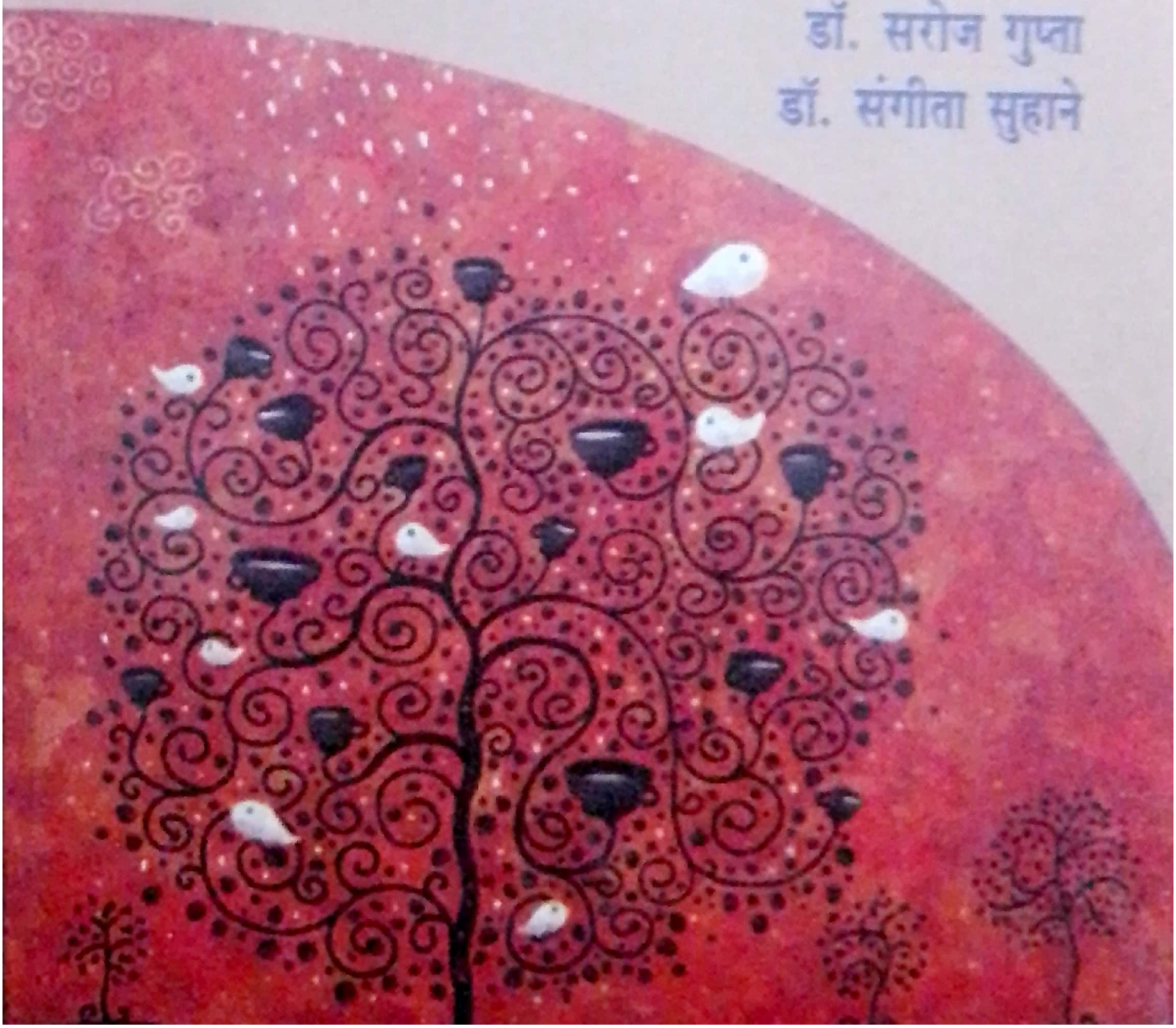

Scanned with OKEN Scanner

पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से, अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

ISBN : 978-81-905555-0-0

वितरक-1 : अनामिका प्रकाशन
52, तुलारामबाग, इलाहाबाद-211006
फोन : 9415347186, 9415763049

वितरक-2 : वैरायटी बुक्स
5, सिविल लाइंस, सागर-470001 (म. प्र.)
फोन : 9827514447

प्रकाशक : **अनुभूति पब्लिशर्स**
52 तुलारामबाग, इलाहाबाद-211006

e-mail : vinodshukla185@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2016

स्वत्वाधिकार : लेखक

टाईप सेटिंग : मानस कम्प्यूटर्स, इलाहाबाद

मुद्रक : ग्राफिक ऑफसेट, इलाहाबाद

मूल्य : **रु0 495.00**

Loak sahitya aur Vaishwikaran
a collection of articles on Folk by Dr. Saroj Gupta

Scanned with OKEN Scanner

विषय-क्रम

• शुभाशंसा	डॉ. श्यामसुन्दर दुबे	9
• भूमिका	सरोज गुप्ता	11
1. लोक में प्रतिरोध : कुछ अनुभव कुछ विचार	विजय बहादुर सिंह	17
2. अरुणाचल की मोनपा जनजाति का सांस्कृतिक परिदृश्य	माधवेन्द्र पाण्डेय	20
3. प्रकृति का पूर्वी क्षितिज	भरत प्रसाद	35
4. लोक संस्कृति में प्रतिरोध	प्रकाश त्रिपाठी	41
5. नागा लोक संस्कृति	श्रुति पाण्डेय	44
6. अस्मिता विमर्श : लोकभाषा एवं लोक संस्कृति	आशुतोष	53
7. बुन्देली लोक संस्कृति और वैश्वीकरण	राजेन्द्र यादव	61
8. लोक साहित्य में चेतना और ब्रज भाषा	अमी आधार निडर	68
9. बुन्देली लोक भाषा पर वैश्वीकरण का प्रभाव	बहादुर सिंह परमार	73
10. लोकगीतों में झंकृत स्त्री हृदय	अफरोज बेगम	77
11. हिन्दी लोकगीतों में संस्कृति और समाज	मंजू तिवारी	84
12. वैश्वीकरण का लोक साहित्य पर प्रभाव	प्रभात द्विवेदी	88
13. वैश्वीकरण और लोकचेतना	आशीष ज्योतिषी	92
14. बुन्देली लोक-साहित्य में प्रतिरोध की अन्तर्धारा	नीरज कुमार द्विवेदी	94
15. लोक साहित्य और वैश्वीकरण	के. सी. जैन	101
16. लोक हिन्दी कविता में चित्रित गाँव	ममता सिंह	108
17. लोक साहित्य समाज और संस्कृति	कमल सोमवंशी	113
18. बुन्देली कहावतों में मनोविज्ञान	संगीता सुहाने	119
19. लोक-कथा का स्वरूप एवं विशेषतायें	के. सुमित्रा	124
20. लोक साहित्य में जीवन सत्य	सरिता जैन	127
21. लोक साहित्य का सामाजिक अनुशीलन	अवधेश कुमार	131
22. वैश्वीकरण और आदिवासी लोकगीत	मनीष कुमार	138
23. लोक कलाओं का वैश्वीकरण	मयंक तिवारी	146
24. हरियाणा के लोकगीत में राष्ट्रीय भावना	जी. त्रिवेणी	149
25. लोक साहित्यः हिंदी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा में	अतुल वैभव	153
26. दिल्ली का लोक-साहित्य : भाषा और संस्कृति	एच. शैलाभवानी	157
27. लोक साहित्य में कागज की भूमिका	नीलम गुप्ता	160
28. मराठी लोक-साहित्य में लोकनाट्य 'तमाशा'	जगदाले अप्पासाहेब गोरक्ष	163

❐

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. सरोज गुप्ता

- 20 जुलाई को बड़ागाँव, झाँसी (उ. प्र.) में जन्म।
- पिता श्री बुद्धिप्रकाश सरावगी मर्मज्ञ विद्वान एवं इतिहास विशेषज्ञ।
- 'बुन्देलखण्ड कनेक्ट-2016' सम्मान से सम्मानित डॉ. सरोज गुप्ता बुन्देलखण्ड की मातृभाषा बुन्देली, साहित्य एवं संस्कृति पर विगत चालीस वर्षों से कार्य कर रही हैं। महाविद्यालय में अध्ययन, अध्यापन के साथ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की लघु एवं वृहद परियोजनाओं पर कार्य करते हुए अब तक पच्चीस पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं तथा अभी हाल में बुन्देली का प्रामाणिक वृहद शब्दकोश का प्रकाशन उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान लखनऊ द्वारा किया गया है। महाविद्यालय की एन.सी.सी. अधिकारी के रूप में कैप्टन के पद पर बारह वर्षों तक सेवायें देकर राष्ट्रीय स्तर पर बुन्देलखण्ड की कई छात्रायें आर्मी, पुलिस में विभिन्न पदों पर पदस्थ हैं। आपके निर्देशन में ग्यारह शोधार्थियों ने पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की है तथा मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। डॉ. सरोज गुप्ता महाविद्यालय में विभिन्न विषयों पर तीन राष्ट्रीय स्तर की शोध संगोष्ठियों की संयोजक व सचिव रही हैं। राष्ट्रीय स्तर के कई सम्मान आप समय-समय पर प्राप्त कर चुकी हैं।
- सम्प्रति : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय शासकीय स्नातकोत्तर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)
- संपर्क : सीमा कॉलोनी, स्नेह नगर, मधुकरशाह वार्ड, सागर (म. प्र.)
- दूरभाष : 07582-265718, मोबाइल - 9425693570
- e-mail : sarojgupta1234@gmail.com

डॉ. संगीता सुहाने

- 30 मार्च को उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के बड़ागाँव में जन्म। पिता श्री बुद्धिप्रकाश सरावगी मर्मज्ञ विद्वान एवं इतिहास विशेषज्ञ। लम्बे समय से बुन्देली साहित्य, संस्कृति की साधना में संलग्न। राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में सहभागिता। 'बुन्देली कहावतों व लोकोक्तियों का मनोवैज्ञानिक अनुशीलन' विषय पर डॉ. हरीसिंह गौर विश्व विद्यालय, सागर से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त। हमारा बुण्देलखण्ड, लोक जीवन में बुण्देलखण्ड सहित कई पुस्तकों का संकलन व संपादन कर चुकी हैं।
- राष्ट्रीय स्तर के अनेकों सम्मानों से सम्मानित डॉ. संगीता सुहाने स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, सागर (म. प्र.) के हिन्दी विभाग में सहायक प्राध्यापक के पद पर कार्यरत हैं।
- संपर्क : दादा दरबार मंदिर के पास, सिविल लाइंस, सागर (म. प्र.)
- फोनः 07582-223155, मो. 7869970150

Scanned with OKEN Scanner